

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 20, श्वास रहित आह्वान, इफिसियों 1:3-14

© डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह सत्र 20 है, श्वास रहित आह्वान, इफिसियों 1:3-14।

इफिसियों पर बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

हमने अब तक इफिसियों के परिचय को देखा है, और अध्ययन के पिछले दो घंटों में, आपने इफिसियों की व्यापक पृष्ठभूमि देखी है, और हमने इफिसियों की पहली कुछ आयतों को पढ़ा है। यदि आपको इफिसियों पर पिछला सत्र याद है, तो मैंने अध्याय 1 की आयतें 3 से 14 तक पढ़ी थीं। तो, इस सत्र में हम जो करने जा रहे हैं, वह उस विशेष पंक्ति को देखना शुरू करना है, जो वास्तव में किसी यूनानी पाठ में एक वाक्य है, और अब कुछ चीजों को खोलना शुरू करना है क्योंकि अब आपको उस रूपरेखा की अच्छी समझ हो गई है जो मैंने आपको पहले दिखाई थी।

तो, आइए यहाँ कुछ मुख्य बातों पर गौर करना शुरू करें, खास तौर पर पद 3 से। पद 3 में यह अंश इस वाक्य से शुरू होता है कि परमेश्वर धन्य है जिसने हमें स्वर्गीय क्षेत्रों में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है। मैं आपका ध्यान यहाँ आधारों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आइए परमेश्वर को आशीर्वाद दें।

इसका आधार क्या है? क्योंकि उसने हमें आशीर्वाद दिया है। दूसरे शब्दों में, धन्य लोग अब परमेश्वर को आशीर्वाद देते हैं क्योंकि उसने उन्हें वास्तव में आशीर्वाद दिया है। इसका सार यह है कि उसने उन्हें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है।

मुझे याद है कि मैं एक छात्र के रूप में इफिसियों पर एक कक्षा ले रहा था और एक प्रोफेसर, जो आज भी एक बहुत प्रसिद्ध प्रोफेसर है जो एक बहुत ही प्रतिष्ठित संस्थान में पढ़ाता है, उस समय एक स्नातक छात्र के रूप में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद को समझाने की कोशिश कर रहा था। और मुझे एहसास होने लगा कि यह कितना संघर्षपूर्ण था, एक ऐसा व्यक्ति जो पश्चिमी देश में पला-बढ़ा था, जो प्राचीन दुनिया में चल रही सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों, उस समय पश्चिमी एशिया माइनर की सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों, आध्यात्मिक आशीर्वाद के संघर्ष के समाजशास्त्रीय आयामों में इतना शामिल नहीं था। और उसने इसे समझाया, और उसने बहुत अच्छी तरह से समझाया।

बाद में, जब मैंने इफिसियों पर अपना शोध समर्पित किया, तो मुझे एहसास हुआ कि यह कितना समृद्ध वाक्य है। धन्य है परमेश्वर, जिसने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है। तो, मैं बस इस पर प्रकाश डालना चाहता हूँ।

हर आध्यात्मिक आशीर्वाद। यदि आप पहली सदी में इफिसुस में रहते थे, जैसा कि आप हमारी प्रारंभिक चर्चा से याद कर सकते हैं, तो आपको एहसास होना शुरू हो गया होगा कि जीवन के बारे में सब कुछ आध्यात्मिक गतिविधि से जुड़ा हुआ है। किसान को अच्छा करने के लिए आध्यात्मिक समर्थन की आवश्यकता होती है।

युवा लड़की को एक अच्छा पति पाने के लिए आध्यात्मिक सहायता की आवश्यकता होती है। व्यवसायियों को आध्यात्मिक सहायता की आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि एथलीट भी जीतने के लिए जादुई आकर्षण का उपयोग करता है।

ऐसे समाज में जहाँ किसी को लगता है कि उसे आगे बढ़ने के लिए आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता है क्योंकि कोई और व्यक्ति उसे नीचे गिराने या उससे प्रतिस्पर्धा करने या उससे आगे निकलने के लिए आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग करने की कोशिश कर रहा है, आध्यात्मिक आशीर्वाद बहुत महत्वपूर्ण हैं। और जो कुछ भी एक व्यक्ति के पास है और वह करने में सक्षम है, उसे न केवल अपने दम पर किया गया कुछ माना जाता है, बल्कि वह भी जो उसे आध्यात्मिक एजेंसी द्वारा प्रदान किया जाएगा, चाहे वह उनके घरों में मौजूद भगवान हो, देवता या विशेष मंदिर हो जिसके लिए वे बलिदान चढ़ाते हैं। और उनमें से कुछ लोग इन देवताओं को उनके द्वारा उनके लिए किए गए महान कार्यों के लिए किसी प्रकार का धन्यवाद बलिदान चढ़ाने के लिए वापस भी जा सकते हैं।

पौलुस ने कहा कि इफिसुस की कलीसिया के लिए, हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि उसने हमें आशीर्वाद दिया है। उसने हमें जो महान चीजें दी हैं, उनमें से एक जिसे हमें विस्तार से जानने से पहले ही जान लेना चाहिए, वह यह है कि उसने हमें आत्मिक आशीर्वाद दिए हैं। लेकिन कुछ आत्मिक आशीर्वाद नहीं।

यह कोई आध्यात्मिक आशीर्वाद नहीं है। लेकिन उसने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वादित किया है। आइए हम उसे आशीर्वाद दें।

हमें आर्टेमिस के मंदिर से जो चाहिए था, उसने हमें वह दिया है। हमें डेमेटर के मंदिर से जो चाहिए था, उसने हमें वह दिया है। ओह, ज़ीउस का मंदिर इफिसस में था।

आपको वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने आपको सभी आध्यात्मिक आशीर्वाद दिए हैं जिनकी आपको ज़रूरत है। अगर यह सुरक्षा है, तो उसने आपको आशीर्वाद दिया है। आपको डर में रहने की ज़रूरत नहीं है।

आप अपना जीवन जी सकते हैं। वाह। परमेश्वर धन्य है, जिसने हमें एक विशेष स्थान, एक विशेष क्षेत्र, एक विशेष स्थान में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वादित किया है।

उसने हमें प्रभु यीशु मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वादित किया है। वाह। जब तक हम मसीह में हैं, हम हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से धन्य हैं।

आइए हम इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर वाक्य की शुरुआत इस तरह से होती है तो पॉल एक लंबा वाक्य क्यों लिखेगा? इसीलिए मैं इसे एक बेदम प्रार्थना कहता हूँ। वह 50 मूर्तिपूजक मंदिरों, जादुई गतिविधियों और इन सभी चीजों वाले शहर को देखता है, और देखता है कि परमेश्वर ने परमेश्वर के बच्चों के लिए क्या किया है।

और वह आगे कहता है, तुम्हें पता है क्या? परमेश्वर ने हमें आशीर्वाद दिया है। आइए हम उसके नाम को आशीर्वाद दें। उसने हमें प्रभु यीशु मसीह में आशीर्वाद दिया है।

और उसने हमें स्वर्गीय क्षेत्रों में आशीर्वाद दिया है। स्वर्गीय क्षेत्र एक ऐसी अवधारणा है जिसके बारे में मुझे उम्मीद है कि इफिसियों में हमारी चर्चा के दौरान, मुझे कहीं और और भी अधिक विस्तार से बताने का समय मिलेगा। स्वर्गीय क्षेत्रों की अवधारणा ऐसी अवधारणा नहीं है जो किसी स्थान या किसी चीज़ जैसी हो।

यह प्राचीन दुनिया की एक ब्रह्माण्ड संबंधी समझ है जो कहती है कि दुनिया में, दुनिया का एक आध्यात्मिक आयाम है। आध्यात्मिक आयाम स्वर्गीय क्षेत्रों में है। कभी-कभी, इस क्षेत्र को चरणों के संदर्भ में सोचा जाता है।

इस क्षेत्र में बुरी और अच्छी आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं। यह मानवीय वास्तविकता का अदृश्य क्षेत्र है। मुझे याद है कि मैंने कुछ विद्वानों से इस बारे में शोध किया था और उनसे बात की थी जिसे मैं दूसरी वास्तविकता कहता हूँ।

और एक विद्वान ने कहा कि यह वास्तविकता नहीं है क्योंकि वास्तविकता वह है जिसका हम अपनी इंद्रियों से आकलन कर सकते हैं। हाँ, यह सच है। लेकिन पहली सदी में इफिसुस के ईसाइयों के लिए, एक और वास्तविकता थी।

पॉल कहते हैं कि अदृश्य वास्तविकता में आध्यात्मिक शक्तियाँ काम कर रही हैं और वे हमारे दैनिक कार्यों को प्रभावित कर सकती हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। हम अदृश्य क्षेत्रों में धन्य हैं। परमेश्वर ने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्षित किया है।

वह बाद में दिखाएगा कि परमेश्वर के पास हर उस आध्यात्मिक शक्ति को अधीन करने की शक्ति है जो हमसे प्रतिस्पर्धा करने या हमें नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगी। उसके पास उन पर अधिकार है। वास्तव में, उसने मसीह को उनसे ऊपर रखा है।

और इसलिए, चर्च निश्चित हो सकता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो भी डरने की बात है, वह अब डरने की बात नहीं है। आइए हम परमेश्वर के नाम की स्तुति करें।

हम अब ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहाँ कभी-कभी जीवन ऐसे जिया जाता है जैसे हमें ईश्वर की आवश्यकता ही न हो। ऐसा लगता है जैसे यहाँ आध्यात्मिक क्षेत्र जैसा कुछ भी नहीं है। मुझे यह विडंबनापूर्ण लगता है कि एक ऐसी दुनिया में जहाँ हमारा मानवशास्त्र या मानवता के बारे में हमारा दृष्टिकोण कहता है कि मनुष्य शरीर, आत्मा और आत्मा, या शरीर और आत्मा, या शरीर,

आत्मा से बना है, वही दुनिया हमें यह विश्वास दिलाती है कि जब हम अपने जीवन को जीने के तरीके की बात करते हैं, तो यह सब हमारे शरीर के बारे में होता है।

मैं वैचारिक या दार्शनिक रूप से इस विचार से जूझता रहा हूँ कि वही लोग जो कहते हैं कि मानवता का एक पहलू आत्मा या भावना है, वे इस बात को नकारना या अनदेखा करना चाहते हैं कि आध्यात्मिक क्षेत्र या आध्यात्मिक एजेंसी या आध्यात्मिकता नामक कोई चीज़ है जो मानव जाति के कल्याण को आकार दे सकती है। पॉल के पाठकों को यह समस्या नहीं है। उनका मानना है कि जीवन का आध्यात्मिक हिस्सा दुष्ट आध्यात्मिक एजेंटों द्वारा सक्रिय, सकारात्मक रूप से प्रभावित या नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकता है।

उन्होंने कहा, भगवान का शुक्र है। तुम्हें इन सब बातों की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। तुम अच्छी जगह पर हो।

भगवान को धन्यवाद क्योंकि आप इन देवताओं को जानते हैं जिन्हें मैंने आपको परिचय में पहले दिखाया था। एस्क्लेपियस, उपचार के देवता, जब आप बीमार होते हैं और वह सब, हाँ, आप वहाँ नहीं जा सकते क्योंकि आप एक ईसाई हैं। आप जाकर इन देवताओं के प्रति निष्ठा नहीं दिखा सकते या उनसे नहीं माँग सकते या बलि नहीं चढ़ा सकते। आपको वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है।

आपको शराब की देवी के पास जाने की ज़रूरत नहीं है। आपको आर्टेमिस के मंदिर में जाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आपको आर्टेमिस के आध्यात्मिक आशीर्वाद की ज़रूरत नहीं है क्योंकि आपको हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से नवाज़ा गया है। और मुझे यह ब्रिटिश विद्वान की बात सबसे अच्छी लगी जिसने इसे इस तरह से व्यक्त किया।

यह विशेष रूप से स्वर्ग की प्राथमिकता है, जिसका सबसे ऊपरी हिस्सा मसीह है, जो स्वर्गीय क्षेत्रों के बारे में बात करता है। उसके नीचे चर्च है, जो चर्च के विपरीत है, लेकिन फिर भी स्वर्ग के भीतर शक्तियाँ हैं। स्वर्ग मानव जीवन में पारलौकिक के आयाम का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से अस्तित्व की संभावनाएँ खुलती हैं।

मसीह द्वारा दर्शाई गई संभावनाएँ और वे शक्तियाँ जिनके संबंध में निर्णय लिया जाना चाहिए। यदि मसीह को चुना जाता है, तो विश्वासी खुद को स्वर्ग में और उनसे ऊपर पाते हैं क्योंकि वे मसीह के शरीर में हैं और उनके नेतृत्व के अधीन हैं। धन्य है परमेश्वर, जिसने हमें स्वर्गीय क्षेत्र में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्षित किया है।

क्यों? मैं इसे आपके लिए एक तरह से समझने की कोशिश करता हूँ। हे भगवान धन्य हो। क्यों? उसने हमें चुना।

उसने हमें चुना। उसने हमें छुड़ाया, और उसने हमें पवित्र आत्मा से मुहरबंद किया। आइए हम उसे आशीर्वाद दें।

मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि यह कैसे हो रहा है ताकि आप इस संक्षिप्त रूपरेखा को समझ सकें जो मैंने यहाँ रखी है क्योंकि मैं इस संक्षिप्त रूपरेखा का उपयोग इस

एक वाक्य को खोलने और यह कैसे यहाँ दिखाई देता है, यह बताने के लिए करूँगा। भगवान का धन्यवाद हो क्योंकि उन्होंने हमें चुना। वाह।

पद 4. जैसे उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुना था, वैसे ही हमें भी उसके सामने प्रेम में पवित्र और निर्दोष होना चाहिए। उसने हमें चुना है। यह हम ही हैं।

हर कोई नहीं, बल्कि हम मसीह यीशु में विश्वास करने वालों की बात कर रहे हैं। उसने सभी विश्वासियों को चुना, जिसमें पॉल भी शामिल है। पॉल ईसाइयों के बारे में एक सामूहिक समूह के रूप में बात करने जा रहा है, न कि किसी एक समूह के रूप में, जो कहीं छिपा हुआ है, ताकि जब वह एकता के बारे में बात करे, तो चर्च समझ सके कि परमेश्वर ने उन लोगों के लिए क्या किया है जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं और भरोसा करते हैं, यह बात हर जगह सच है जहाँ भी ईसाई पाए जाते हैं।

उसने हमें, मसीह में विश्वास करने वालों को आशीर्वाद दिया है। और आप, शायद इस व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करते हुए जो एक ईसाई हैं, आप हम में शामिल हैं। उसने हमें चुना है।

उन्होंने हमें बाद में नहीं चुना। कोई यह सोचे कि यह महज संयोग है। नहीं।

उसने हमें दुनिया की नींव रखने से पहले ही चुन लिया था। यह हमेशा से परमेश्वर की योजना रही है कि वह हमें चुने। ओह, अगर आप कैल्विनिस्ट हैं, तो आपको इसके बारे में हल्लेलुया कहना चाहिए।

यह कोई संयोग नहीं है। उसने हमें दुनिया की नींव रखने से पहले ही चुन लिया था। ऐसा नहीं है कि उसने इन दुखी लोगों को झूठे देवताओं पर विश्वास करते हुए, सभी प्रकार की धार्मिक गतिविधियों में लिप्त होते हुए देखा और कहा, मुझे तुम्हारे लिए बहुत बुरा लग रहा है।

आज मैं आपको इस स्थिति से बाहर निकालने का फैसला करता हूँ। नहीं, ऐसा नहीं हुआ। यह कोई ऐसी परिस्थिति भी नहीं है।

किनारे पर ऐसे बैठे हुए मानो भगवान छुट्टी मना रहे हों, और जब वे समुद्र तट पर आराम कर रहे होते हैं, तो वे एक बच्चे को डूबते हुए देखते हैं, और वे बस दौड़कर जाते हैं और कहते हैं, मुझे उस विशेष स्थिति में उस बच्चे को बचाने के लिए सब कुछ करना होगा। नहीं। यह भगवान की योजना का हिस्सा था।

उसने हमें दुनिया की नींव रखने से पहले ही चुन लिया था। यहूदियों और गैर-यहूदियों को एक साथ विश्वास के समुदाय में लाना हमेशा से उसका उद्देश्य और इच्छा रही है। पौलुस इस पत्र के दौरान इस तर्क को और अधिक विस्तार से बताएगा।

परमेश्वर की योजना है कि सभी लोग मसीह में एक होंगे। सभी चीज़ें मसीह के प्रभुत्व के अधीन होंगी। यह रोमांचक है।

अगर यह विस्तार नहीं किया गया होता, तो हम सभी मुसीबत में होते। उसने हमें प्रेम से चुना, और उसने हमें अपने सामने पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुना। यही वह हिस्सा है जो आज के चर्च में मुश्किल हो जाता है।

लोग पवित्रता और निर्दोषता के बारे में बात नहीं करना चाहते। लेकिन पौलुस कहता है कि आपको आयत 4 में यह जानना चाहिए कि उसने हमें पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुना है। आइए देखें कि इसका क्या मतलब है।

मैंने आपको पवित्रता और निर्दोषता का एक ज्वलंत चित्र दिया है। पवित्र होने का मतलब है परमेश्वर के उपयोग के लिए अलग होना। भ्रष्ट समाज में आचरण द्वारा अलग होना।

मैंने आपको व्यवस्थाविवरण से पवित्रता के संदर्भ में पुराने नियम का संदर्भ दिया है, जहाँ पाठ दिखाता है कि परमेश्वर के लोगों को कैसे पवित्र होना चाहिए। यह कहने के लिए कि उन्हें पवित्र होने के लिए चुना गया है या अलग रखा गया है, व्यवस्थाविवरण में पुराने नियम का पाठ हमें याद दिलाता है कि इसका मतलब है कि उन्हें उस भ्रष्ट समाज की तरह नहीं होना चाहिए जिसका वे हिस्सा बन गए हैं। उन्हें अलग रखा जाना चाहिए।

अलग रखे जाने का मतलब है कि उनका आचरण अलग होना चाहिए। यह इस तरह से लिखा गया है। जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें उस देश में ले जाएगा, जिसमें तुम प्रवेश करने और कब्ज़ा करने वाले हो, और वह तुम्हारे सामने से कई राष्ट्रों को निकाल देगा।

लेकिन तुम्हें उनके साथ, यानी राष्ट्रों के साथ, इस तरह से पेश आना चाहिए। उनकी वेदियों को तोड़ दो। उनके खंभों को तोड़ दो।

उनकी पूजा मत करो। उनके जख्मी खंभों को ठीक करो। और उनकी मूर्तियों को आग में जला दो।

क्योंकि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र लोग हो। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें पृथ्वी के सभी लोगों में से अपने लोगों, अपनी अनमोल सम्पत्ति के रूप में चुना है। दूसरे शब्दों में, इन सभी मूर्तिपूजक गतिविधियों के दौरान आपस में न मिलें।

इफिसियों का कहना है कि उसने हमें पवित्र होने के लिए चुना है, और उसने हमें निर्दोष, बेदाग, बेदाग होने के लिए चुना है। यह चित्रण बलिदान के लिए दिए जाने वाले जानवर का चित्रण है। जानवर को निर्दोष होना चाहिए।

जानवर बेदाग होना चाहिए। बेदागी का नैतिक अर्थ है नैतिक रूप से बेदाग होना ताकि सामाजिक रूप से लोग आपको बेदाग समझें। भगवान ने हमें चुना है।

उसने हमें ऐसी जगह से चुना जो इतनी अच्छी नहीं है। लेकिन उसने हमें पवित्र और निर्दोष होने के लिए भी चुना। वाह!

धन्य है परमेश्वर जिसने हमें आशीर्वाद दिया है, जिसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले पवित्र और निष्कलंक होने के लिए चुन लिया। पद 5 से, उसने अपनी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार यीशु मसीह के माध्यम से हमें पुत्रों के रूप में गोद लेने के लिए पहले से ही नियुक्त किया, उसके गौरवशाली अनुग्रह की प्रशंसा के लिए जिसके साथ उसने हमें प्रिय में आशीर्वाद दिया है - गोद लेने का शब्द मैंने पहले संकेत दिया था।

गोद लेना, खास तौर पर रोमनों के बीच, एक बहुत ही आम प्रथा थी। अन्य संस्कृतियों में भी गोद लेने का प्रचलन था। यह आज की पश्चिमी दुनिया में गोद लेने की प्रथा से बहुत अलग नहीं है।

यह वह समझ नहीं है जो हमारे समाज में है जिसमें मैं बड़ा हुआ हूँ। जब हम गोद लेने या किसी के बच्चे को गोद लेने की बात करते हैं, तो मैं किसी के बच्चे को गोद ले सकता हूँ और उनसे कह सकता हूँ कि वे मेरे साथ आकर रहें। मैं उनकी देखभाल करता हूँ, और मैं उन्हें स्कूल जाने में मदद कर सकता हूँ।

मैं उन्हें शिक्षा दे सकता हूँ। मैं उनकी शादी की उम्र तक उनके माता-पिता की तरह उनके साथ रह सकता हूँ। अगर वे शादी कर लेते हैं, तो वे अपने जीवन में आगे बढ़ जाते हैं।

वे खुद ही चले जाते हैं। मैं उनका अभिभावक नहीं हूँ। मेरे पास कोई कानूनी कागजात नहीं हैं।

मुझे कोई शर्त नहीं है। उनके माता-पिता अभी भी उनके माता-पिता हैं। वे कभी भी वापस जा सकते हैं।

मैं इसी संस्कृति में पला-बढ़ा हूँ। इसलिए, जब मैं 21 साल का था, तो मेरे पास दो लोग थे जो इस तरह की स्थिति में मेरे संरक्षण में थे। वे कहते थे कि यह गोद लेना है।

यदि आप इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हुए उन संस्कृतियों में से किसी से आते हैं, तो हम यहाँ उस तरह के गोद लेने की बात नहीं कर रहे हैं। यहाँ गोद लेने का अर्थ है कुछ कानूनी कार्यवाही से गुजरना ताकि व्यक्ति उस व्यक्ति का वैध उत्तराधिकारी बन जाए जिसने उसे गोद लिया है। यहाँ पॉल ने जिस विशेष शब्द का प्रयोग किया है, वह ग्रीक शब्द यूयोथेसिया है।

यूयोथेसिया, एक पुल्लिंग के रूप में, आमतौर पर गोद लिए गए पुरुषों को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है। मुझे टिलमैन का यह कहना पसंद है। हालाँकि, यह शब्द ग्रीको-रोमन दुनिया में आम था, जहाँ इसका मतलब एक कानूनी प्रथा से था जिसके तहत एक परिवार का पिता एक पुरुष बच्चे को अपना उत्तराधिकारी स्वीकार करता था जो उसका अपना नहीं था।

इस बच्चे को विरासत का अधिकार होगा। इस बच्चे को उन सभी विशेषाधिकारों का अधिकार होगा जो पिता को अपने बच्चों के लिए प्राप्त हैं। आप इस लंबे वाक्य में देखेंगे कि पौलुस उन्हें याद दिलाएगा कि न केवल वे मसीह यीशु में विश्वास करके परमेश्वर की संतान होने के लिए गोद लिए गए हैं, बल्कि वे विरासत के भागीदार भी हैं।

उनकी विरासत भविष्य में, मसीह के दूसरे आगमन में पूरी तरह से उनके कब्जे में आने का इंतज़ार कर रही है। लेकिन अभी के लिए, उन्हें सिर्फ़ गोद लिए गए बच्चे होने के कारण ही बहुत सारे संसाधनों का आशीर्वाद मिला हुआ है। और यही वह कारण है जिसके लिए उन्हें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।

उन्हें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उन सभी लाभों के लिए उन्हें आशीर्वाद देना चाहिए जो उन्होंने हमें दिए हैं। वह कहते हैं कि हमें मुक्ति मिल गई है। उन्होंने हमें मुक्ति की इस भावना से आशीर्वाद दिया है।

आइए हम छुटकारे शब्द पर गौर करें। उसने हमें अपने में, मसीह यीशु में, आशीर्वाद दी है। उसने हमें बड़ी कीमत चुकाकर छुड़ाया है।

वह विशेष वाक्यांश, मसीह द्वारा या उसके माध्यम से छुड़ाया जाना, कुछ ऐसा है जिसके साथ विद्वान संघर्ष करते हैं। आप इसका अनुवाद कैसे करेंगे? क्योंकि अगर आप कहते हैं कि अगर आप इसका अनुवाद इस तरह करते हैं जैसे कि मसीह का खून छुटकारे के लिए चुकाई गई कीमत थी, तो आप कह रहे हैं कि उद्धार के लिए फिरौती का भुगतान किया गया था। अब, बाद में, कुछ ऐसा जो पॉल को नहीं पता था कि प्रारंभिक ईसाई धर्म में विकसित होने जा रहा है।

विद्वान और धार्मिक ईसाई नेता प्रायश्चित्त का सिद्धांत विकसित करने जा रहे हैं। और प्रायश्चित्त के सिद्धांत के कई दृष्टिकोण होंगे। और उन दृष्टिकोणों में से एक वह होगा जिसे हम फिरौती सिद्धांत कहेंगे।

फिरौती का सिद्धांत इस मुद्दे पर संघर्ष करेगा कि क्या हमारे उद्धार के लिए कीमत चुकाई गई थी और यह कीमत किसे चुकाई गई थी। कैंटरबरी के सेंट एंसलम कहेंगे, ओह, मुझे लगता है कि मुझे पता है कि कीमत किसे चुकाई गई थी। यह शैतान को चुकाई गई थी। नहीं।

परमेश्वर को शैतान के साथ कीमत चुकाने के लिए बातचीत करने का कोई अधिकार नहीं था। मुझे ऐसा नहीं लगता। यहाँ पौलुस का उद्देश्य यह दिखाना नहीं है कि किसे कीमत चुकानी पड़ी।

वह भाषा का इस्तेमाल करके उन्हें यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि उनका उद्धार कितना महंगा है। उन्हें यह समझाने के लिए कि उनका उद्धार सस्ते तरीकों से नहीं हुआ है। यह महंगा था।

परमेश्वर ने अपने इकलौते बेटे की कीमत चुकाकर उन लोगों के लिए दत्तक ग्रहण संभव बनाया जो मसीह में हैं। और अगर आप यह समझते हैं, तो ऐसे आशीर्वाद के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना एक अच्छा कारण क्यों नहीं होगा? इस छुटकारे में, उसने कुछ बहुत बढ़िया पेशकश की है। मुझे इसे पढ़ने दें।

उसके द्वारा हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिला है। यही कीमत है। उसके अनुग्रह के धन के अनुसार हमारे अपराधों की क्षमा।

आइए यहाँ रुकें। हमारे सभी पापों की क्षमा, जो हमारे पापों के लिए ज़िम्मेदार हैं, मसीह में, मसीह के द्वारा, अपने लहू के द्वारा हमें क्षमा की गई है। अध्याय 2 की शुरुआत में, पौलुस अपने पाठकों और शायद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर के हस्तक्षेप से पहले हम एक बार मरे हुए, बेजान, पाप और अपराधों में थे।

लेकिन यहाँ, प्रशंसा की भावना में, वह चाहता है कि वे इस तथ्य पर आनन्दित हों कि उन्हें क्षमा कर दिया गया है। हमारे लिए कलवरी पर चुकाई गई बड़ी कीमत के माध्यम से हमें क्षमा किया गया है।

हमने इसे खत्म करने के लिए क्या किया? पॉल हमें बाद में बताएगा। यह सिर्फ़ अनुग्रह से ही है कि हमें यह सफलता मिली है। उसने हमें माफ़ किया ताकि वह हमें वापस खरीद सके।

ओह यार, मुझे यह पसंद है। मोचन। मोचन की भाषा कभी-कभी एक गुलाम को उसकी मूल स्थिति में वापस लाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा होती है, जब उस पर बहुत सारा कर्ज होता है, और उसे गुलामी में इसलिए दिया जाता है ताकि वह अपना कर्ज चुका सके और उसे वापस पा सके।

यह बहाली की भाषा भी है। यह एक ऐसी भाषा है जिसका उपयोग यह समझाने के लिए किया जाता है कि जब कोई सुंदर आभूषण वास्तव में कूड़ेदान में खो जाता है, दस साल तक वहीं पड़ा रहता है, जंग खा जाता है, गंदा हो जाता है, बदबूदार, बदसूरत हो जाता है, और उसे उठाया जा सकता है।

इसे सुनार के पास भेजो। उस आभूषण को उसकी मूल स्थिति में वापस लाने की प्रक्रिया भी वह प्रक्रिया है जिसे छुटकारे की भाषा में समझाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। पॉल कहते हैं, परमेश्वर धन्य है क्योंकि उसने हमें छुड़ाया है और हमारे अपराधों को क्षमा किया है।

वाह। और उसने यह किया है। किस तरह से? किस प्रेरणा से? ओह, श्लोक 8। जिसे उसने हम पर भरपूर मात्रा में बरसाया।

उसने यह सब पद 7 के अंत में अपने अनुग्रह के धन के अनुसार किया जो उसने हम पर बरसाया। यह धन के अनुसार है। मुझे वह शब्द पसंद है जब वे बाउंटी शब्द का उपयोग करते हैं क्योंकि यह अंग्रेजी में ठीक से नहीं आता है।

ग्रीक शब्द वह शब्द है जिसका इस्तेमाल आप धन के लिए करते हैं। तो, इस बारे में सोचें। परमेश्वर के पास अनुग्रह की प्रचुरता है, इस हद तक कि आपके पाप की मात्रा और परिमाण भी अनुग्रह से बाहर नहीं निकल सकता।

और इसी अनुग्रह में उसने हम पर वह अनुग्रह बरसाया है। हम पर जो भी बकाया है, उसे क्षमा कर दें क्योंकि उसके पास हमें छुड़ाने और हमें स्वतंत्रता की स्थिति में लाने के लिए क्षमा करने की क्षमता है। शायद पॉल बुतपरस्त दुनिया की उन सभी चीज़ों के बारे में सोच रहा है जिनमें लोग उलझे हुए हैं।

शायद पौलुस उन सभी तरह के पापों के बारे में सोच रहा था जिनमें लोग खुद को बंद कर लेते हैं और उसने कहा, अगर आपको लगता है कि यह बहुत ज़्यादा है। यह परमेश्वर की क्षमता से परे नहीं था कि वह इसका भुगतान कर सके। हाँ, इसकी कीमत बहुत ज़्यादा थी।

लेकिन वह अनुग्रह से ऐसा करने के लिए तैयार था। उसने ऐसा बातचीत या चालाकी से नहीं किया। उसने हम पर अपनी कृपा बरसाई।

मैंने एक बार एक स्कूल में पॉल के बारे में बात करते हुए एक छात्र से कहा था कि पॉल एक ऐसा व्यक्ति है जो ओसामा बिन लादेन के जीवित रहते हुए कह सकता है कि अगर कभी ओसामा बिन लादेन मसीह को अपना जीवन दे दे, उसे अपना भगवान और उद्धारकर्ता मान ले, तो पॉल कहेगा कि उसे माफ़ करने के लिए ईश्वर की कृपा पर्याप्त है। उसके हाथों पर बहुत खून है। लेकिन उसे माफ़ किया जा सकता है, और उसे ईश्वर के परिवार में स्वीकार किया जा सकता है।

आपने जो किया है, आस-पास के हर स्रोत के संदर्भ में उन्होंने जो किया है, वह ऐसा कुछ नहीं है जिसे ईश्वर क्षमा न कर सके। हम जो अपराध करते हैं, वह ईश्वर की कृपा से बड़ा नहीं है। अपने धन से, अपनी कृपा की उदारता से, जो उसने हम पर बरसाई, उसने हमें मुक्ति दिलाई।

धन्य है परमेश्वर, जिसने ऐसा होने दिया। छुटकारे के बारे में बात करते हुए, एक विद्वान इसे इस तरह से कहते हैं, पौलुस द्वारा ग्रीक शब्द, दस अपोलुट्रोसिन, वे दो ऐमाटोस हैं, दो हैं, जिसका अनुवाद उसके रक्त द्वारा या उसके माध्यम से छुटकारे के लिए किया जाता है, इसका मतलब है कि कीमत चुकाने के माध्यम से गुलामी से छुटकारे का रूपक उसके लिए जीवित था। यह असंभव है कि वह यह समझने में विफल रहा कि यह अर्थ उसके गैर-यहूदी पाठकों के लिए आसानी से नहीं होगा।

इसलिए, यह असंभव है कि वह इस अर्थ को संप्रेषित करने का इरादा नहीं रखता था। हालाँकि, छुटकारे के रूपक का उपयोग करने में पॉल की प्राथमिक चिंता शायद यह संप्रेषित करना था कि मसीह की मृत्यु में, परमेश्वर शक्तिशाली रूप से अपने लोगों को बचाने के लिए आया, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहले के समय में किया था जब उसने उन्हें मिस्रियों, बेबीलोनियों और अन्य देशों से बचाया था। यही वहाँ उद्देश्य है।

और अगर मैं इफिसियों की तरह ही इफिसियों के बारे में भी बात करूँ, तो मैं कभी-कभी व्यक्तिगत रूप से इफिसियों के बारे में बात नहीं कर सकता, इसलिए कृपया मुझे माफ़ करें। चाहे आप कहीं भी गए हों, चाहे आपने खुद को कितने भी पाप में पाया हो, चाहे आपके कार्यों ने आप पर कितना भी अपराध बोध क्यों न थोपा हो, परमेश्वर अपनी कृपा से आपको क्षमा करने और छुड़ाने में सक्षम है। मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम इस पुस्तक को आगे बढ़ाएँगे, आप इस कृपा की प्रकृति को समझेंगे।

हाँ, यह सच है। श्लोक 8, कि उसने सारी बुद्धि और समझ से हमें भरपूर किया है, उसने अपनी इच्छा का भेद हमें बताया है, उस अच्छी इच्छा के अनुसार जो उसने मसीह में रखी है। समय के

पूरे होने की योजना के अनुसार, स्वर्ग की और पृथ्वी की सभी चीज़ों को उसमें इकट्ठा करने के लिए।

मैं रहस्य के बारे में संक्षेप में बताना चाहता हूँ। परमेश्वर ने अपनी इच्छा के अनुसार रहस्य को प्रकट किया। उसने ऐसा नहीं किया।

उसने जो कुछ किया, वह अनिच्छा से नहीं दिखाया। यह उसकी अपनी इच्छा के अनुसार है। परमेश्वर की योजना को संचालित करने के कार्य में, उसने इस रहस्य को प्रकट किया।

मैंने आपको पहले ही बताया था कि यह कोई संयोग नहीं है। दुनिया की नींव रखने से पहले ही, पॉल ने यह सब तय कर लिया था। पॉल का कहना है कि योजना पहले से ही थी, और वह बस उस योजना को पूरा करने की कोशिश कर रहा है।

परमेश्वर के अंतिम उद्देश्य में सभी चीज़ों को मसीह में समेटना है, उसने इस उद्देश्य के लिए इस रहस्य को प्रकट किया। कि एक दिन, वह सभी चीज़ों को मसीह में समेट देगा। मैं उस शब्द का अध्ययन कर रहा था क्योंकि वह शब्द, सभी चीज़ों को समेटने के लिए, एक ऐसा शब्द है जिसके अर्थ को समझने की कोशिश में विद्वानों ने बहुत समय बिताया है।

कभी-कभी, हम सोचते हैं कि इस शब्द में मुखियापन का भाव निहित है और सभी चीज़ों को मुखियापन के अंतर्गत समेटना शामिल है। लेकिन आधुनिक शब्दों में, क्लासिकिस्टों ने हमें यह समझने में मदद की है कि जिस भाषा का इस्तेमाल कहीं और नहीं बल्कि शायद नए नियम में एक बार किया गया है, वह शास्त्रीय साहित्य में पाई जाती है। और यह वह भाषा है जिसका इस्तेमाल अदालत में किया जाता है, उदाहरण के लिए, जब कोई वकील या कोई व्यक्ति किसी मामले को बंद करने की कोशिश कर रहा होता है।

उनके पास सभी मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने की क्षमता है ताकि वे सभी सामग्री को संक्षिप्त कर सकें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे न्यायाधीश को निर्णय को प्रभावित करने के लिए महत्वपूर्ण तत्व संक्षिप्त तरीके से दे सकें। अमेरिका में, हम उनमें से कुछ को समापन तर्क कहते हैं, सिवाय इसके कि कुछ समापन कथन बहुत लंबे होते हैं। यहाँ जिस बिंदु पर बात की जा रही है, उसकी प्रकृति ऐसी नहीं है।

लेकिन अंत में मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने की वक्ता की क्षमता ही वह भाषा है जिसका यहाँ उपयोग किया गया है। या वकील की ऐसा करने की क्षमता ही यहाँ चल रही है। पॉल कहते हैं कि परमेश्वर ने रहस्य को प्रकट किया ताकि उचित समय पर, वह मसीह यीशु में सभी बातों का सारांश प्रस्तुत कर सके।

ध्यान दें, मसीह यीशु में। चीज़ें और भी स्पष्ट हो जाएँगी। दुनिया और भी अलग दिखाई देगी।

लोग समझेंगे कि परमेश्वर ने जो दुनिया बनाई है, वह बेहतर है। जब वह समय आएगा, तो स्वर्ग की चीज़ें और पृथ्वी की चीज़ें सब मसीह में समाहित हो जाएँगी। और मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, खासकर अध्याय 3 में, यह अवधारणा और भी स्पष्ट होती जाएगी।

लेकिन फिर से, मैं आपको एक बहुत ही बढ़िया तरीका पढ़कर सुनाता हूँ, जिसमें इसे हाल ही में लिखी गई एक फ्रेंच टिप्पणी में सबसे संक्षिप्त तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। जिस तरह एक वक्ता या लेखक किसी तर्क के तत्वों को एक साथ लाता है और दिखाता है कि वे भाषण या रचना के मुख्य बिंदु को कैसे प्रदर्शित करते हैं, उसी तरह मसीह ब्रह्मांड में व्यवस्था लाएगा। ईश्वर सृष्टि के अलग-अलग तत्वों को एक साथ लाने के लिए मसीह का उपयोग करेगा, चाहे वे स्वर्ग की चीज़ें हों या धरती की चीज़ें।

उसने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीषित किया है, क्योंकि उसने हमें अपने में चुना है। उसने हमें छुड़ाया भी है।

हमें छुड़ाना महंगा था, फिर भी वह उस रास्ते पर गया और हमें माफ कर दिया। यह उसके रहस्य को प्रकट करता है, और यह रहस्य कई आयामों में प्रकट होता है। खैर, अगली बात जो मैं चाहता हूँ कि आप इस एक लंबी पंक्ति में सोचें, जो आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले दुःख परीक्षण पर निर्भर करता है, वह यह तथ्य है कि, हाँ, उसने हमें चुना, नंबर एक।

दूसरी बात, हमें उसमें मुक्ति मिली है। हाँ। लेकिन दूसरी बात यह है कि उसने हमें मुहरबंद कर दिया है।

यहाँ हम कौन हैं? यह अभी भी महत्वपूर्ण है। उसने हम पर मुहर लगा दी, हम जिन्होंने सत्य का वचन सुना है - श्लोक 13।

उसमें, तुम भी, जब तुमने सत्य का वचन, अपने उद्धार का सुसमाचार सुना, और उस पर विश्वास किया, तो प्रतिज्ञा किए गए पवित्र आत्मा से मुहरबंद हो गए, जो हमारी विरासत की गारंटी है जब तक कि हम उसकी महिमा की प्रशंसा के लिए इसे प्राप्त न कर लें। उसने उन लोगों पर मुहर लगाई जिन्होंने सत्य का वचन सुना है। आइए हम उस वचन को हल्के में न लें।

सत्य, धोखा नहीं। मैंने इसे अक्सर इस तरह से कहा है। सत्य को पाने के लिए, व्यक्ति को उस व्यक्ति के संपर्क में आना चाहिए जो पूरे विश्वास के साथ कह सके कि मैं ही मार्ग, सत्य और जीवन हूँ।

यीशु मसीह। हाँ। जिन्होंने सत्य का वचन सुना है।

और वे वे भी हैं जो मुहरबंद हैं और वे भी जिन्होंने विश्वास किया है क्योंकि ये वे लोग हैं, जिन्होंने सत्य के वचन को सुना है और सत्य के वचन पर विश्वास किया है, जिन्हें पवित्र आत्मा के साथ या उसके द्वारा मुहरबंद किया गया है। शक्तिशाली कल्पना।

मैं कुछ बातें बताना चाहता हूँ जो मुहर लगाने से जुड़ी हैं। खैर, अगर आप पवित्र आत्मा के काम के बारे में सोचते हैं जिसका ज़िक्र पौलुस ने अपने कानून में किया है, तो सबसे पहले जमा के बारे में सोचें। आत्मा वह जमा है जो विश्वासी की विरासत की गारंटी देता है।

दूसरा, आश्वासन के बारे में सोचें। आत्मा एक मुहर है जो विश्वासी के अधिकार के छुटकारे की गारंटी देती है। वाह।

पद 14 में, वह कहता है, पवित्र आत्मा की बात कौन कर रहा है, जो हमारी विरासत की गारंटी है जब तक कि हम उस पर कब्ज़ा न कर लें? और आत्मा की उपस्थिति एक वादे के रूप में। कि आत्मा ही वादा किया गया आत्मा है।

क्योंकि वह कहता है, वास्तव में, यह वह आत्मा है जिसका वादा समय से पहले किया गया था। पद 13 के अंत में, हम उस पर विश्वास करते हैं, जिस पर वादा किए गए पवित्र आत्मा की मुहर लगाई गई थी। पुराने नियम में ज्ञात पवित्र आत्मा के कार्य के वादों की ओर इशारा करते हुए।

मैं चाहता हूँ कि आप इस बारे में गंभीरता से सोचें और महसूस करें कि पुराने नियम का यह संकेत महत्वपूर्ण है। और इसलिए, मैं आपको ऐसे वादों का एक उदाहरण दूँगा, पुराने नियम में ऐसे वादों के कम से कम एक या दो उदाहरण, ताकि आप समझ सकें कि पुराने नियम और नए नियम का एक साथ अध्ययन करने का महत्व आपको यह समझने में मदद करता है कि पौलुस प्रारंभिक ईसाई चर्च और हमें क्या संदेश देना चाहता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, योएल 2:28-29, मैं अपनी आत्मा को सभी प्राणियों पर उंडेलूँगा।

तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे दास-दासियाँ भी स्वप्न देखेंगे।

उन दिनों में मैं अपनी आत्मा उंडेलूँगा। यह वही उद्धारण है जिसे पतरस ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में उद्धृत किया है - यहजेकेल में भी ऐसा ही उद्धारण है।

मैं उन्हें एक हृदय दूँगा और उनके भीतर एक नई आत्मा डालूँगा। मैं उनके शरीर से पत्थर का हृदय निकाल दूँगा और उन्हें मांस का हृदय दूँगा। आत्मा, वादा किया गया आत्मा प्रभावी हो गया है, पॉल तर्क देता है।

और वो आत्मा एक गारंटी है, एक प्रतिज्ञा है। ग्रीक शब्द अर्बाबोन । इस ग्रीक शब्द अर्बाबोन में , एंड्रयू लिंकन ने इसे इस तरह से समझाने की कोशिश की।

अर्बाबोन , या शब्द जिसका अनुवाद अग्रिम भुगतान में प्रतिज्ञा के रूप में किया गया है, जो दिया जाता है, वह एक बड़े पूरे का हिस्सा है और उस पूरे के समान ही है और एक गारंटी के रूप में कार्य करता है कि पूरा भुगतान आने वाला है। तो, आत्मा, आने वाले युग के उद्धार की पहली किस्त और गारंटी है, जिसका अस्तित्व का तरीका पूरी तरह से आत्मा द्वारा निर्धारित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर के साथ किया जाने वाला यह अग्रिम भुगतान वास्तविक है।

इसीलिए एक दिन, मैंने सोसाइटी ऑफ बाइबिलिकल लिटरेचर में अपने सहकर्मियों को इफिसियों पर एक पेपर प्रस्तुत करने के लिए उकसाया और पॉल को एक अति-कैल्विनिस्ट के रूप में पेश करना शुरू कर दिया क्योंकि अगर उसने हमें दुनिया की नींव से पहले चुना था और अगर उसने हमें पवित्र आत्मा द्वारा सील कर दिया था ताकि हमें आश्वासन मिले कि भविष्य के

लिए हमारी गारंटी बरकरार है तो इफिसियों के अध्याय 1 से अध्याय 3 तक यह कोई आश्चर्य नहीं है कि जॉन कैल्विन इफिसियों से प्यार करते थे। इस दावे के लिए मैं बस यह जानना चाहता था कि मैं कैल्विनवाद और आर्मिनियनवाद के बीच में हूँ। लेकिन अगर आप इसे पढ़ते हैं, तो आप मदद नहीं कर सकते हैं लेकिन भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करते हैं और कैसे पुरुषों के बेटों और बेटियों में भगवान का काम उन्हें यह समझाना चाहिए कि जो लोग मसीह में विश्वास करते हैं उनके लिए असुरक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है।

उसने अपनी आत्मा की उपस्थिति को जमा किया है और गारंटी दी है, यह जानते हुए कि विरासत कोई ऐसी चीज नहीं है जो हो सकती है या नहीं हो सकती है, बल्कि यह एक वास्तविक आशा है, एक ठोस विरासत है जिसे प्राप्त किया जा सकता है। आइए इसे चर्च धर्मशास्त्र में मोक्ष का आश्वासन कहें। हाँ, मुझे पता है कि अगर आप आर्मिनियन हैं तो आप क्या सोच रहे हैं।

ओह, तो आपका मतलब है कि कोई भी अपना उद्धार नहीं खो सकता? ओह हाँ, मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ, लेकिन मैं इससे आगे नहीं जाना चाहता। पॉल का कहना है कि यही परमेश्वर ने किया है। उसने आपको चुना, उसने आपको छुड़ाया, और उसने आपको पवित्र आत्मा की शक्ति से मुहर लगाई है, एक विरासत की गारंटी दी है, एक भविष्य की संपत्ति जो आपके लिए है।

इसलिए हमें सबसे अच्छा यही कहना चाहिए कि जिसे मैंने सांस रोककर प्रार्थना कहा है, वह है ईश्वर का आशीर्वाद जिसने हमें आशीर्वाद दिया है, जिसने हमें चुना है, जिसने हमें छुड़ाया है, और जिसने हमें मुहर लगाई है। आओ, चर्च, चलो। चलो उसके नाम का आशीर्वाद दें।

यही बात ईसाई धर्म को रोमांचक बनाती है। जब मैं इफिसियों की आयतें पढ़ता हूँ तो मुझे कई तरह की भावनाएँ आती हैं। ईसाई होना एक बड़ी बात है क्योंकि परमेश्वर ने जो किया है, उसके लिए हमें हर सुबह उठकर उसके नाम का आशीर्वाद देने में सक्षम होना चाहिए।

और पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हुए, मैं आपका ध्यान यहाँ कुछ बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। यहाँ आत्मा की मुहर परमेश्वर के क्रोध की पहचान कराती है और उससे सुरक्षा प्रदान करती है। पौलुस जिस भाषा का प्रयोग करता है, उसमें आत्मा के साथ लोगों से व्यवहार करना और मुहर की अवधारणा यह सुझाव देती है कि परमेश्वर अपने लोगों को पहचान सकता है और उन्हें नष्ट नहीं कर सकता और न ही उन्हें बाहर निकाल सकता है।

उसने उन पर निशान लगा दिया है, और इसलिए अपने क्रोध में, वह उन्हें फेंक नहीं देगा। वाह। आत्मा की मुहर एक अग्रिम भुगतान है, यह भी दर्शाता है कि परमेश्वर के पास अपनी खुद की मुहर है जो इस बात से सहमत है और समर्थन करती है कि आपकी विरासत वास्तविक है।

हालाँकि, आत्मा की मुहर मसीह में होती है, ताकि हम इसे बाज़ार में न ले जाएँ और न ही यह कहें कि आप ईश्वर पर विश्वास करते हैं या नहीं। शायद इसीलिए आज जो लोग मसीह में विश्वास करते हैं, उन्हें मसीह को सस्ते में बेचने की कोशिश में बहुत सावधान रहना पड़ता है। उद्धार महंगा था।

इसके लिए परमेश्वर को अपने इकलौते बेटे की कीमत चुकानी पड़ी। विशेषाधिकार बहुत बढ़िया हैं, लेकिन हमें दूसरों को उनके बारे में बताने की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। ऐसा दिखाएँ कि

अपनी सच्ची पहचान और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के लिए एक अच्छा रुख अपनाना कोई मायने नहीं रखता।

इस लंबे वाक्य में, यह आश्चर्यजनक है कि यदि आप मसीह में शब्द को रेखांकित कर रहे हैं और आप देखते हैं कि मसीह में शब्द कितनी बार सामने आता है। मुझे पसंद है कि कैथोलिक बाइबिल एसोसिएशन के एक साथी विद्वान फ्रैंक मटेरा, वाशिंगटन डीसी में कैथोलिक विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। मुझे लगता है कि वाशिंगटन डीसी में कैथोलिक विश्वविद्यालय फ्रैंक इस साल या अगले साल सेवानिवृत्त हो सकते हैं। मुझे उनका यह कहना पसंद है और इसलिए मैं उनकी पंक्तियाँ पढ़ना चाहूँगा।

मसीह की भूमिका परमेश्वर की इच्छा के रहस्य के लिए बिल्कुल अभिन्न है। बार-बार पूर्वसर्ग में प्रयोग करते हुए, पौलुस जानता है कि परमेश्वर ने मसीह में इफिसियों को आशीर्वाद दिया है, पद 3, और उन्हें उसमें चुना है, पद 4। अपने प्रिय में, उसने उन पर अनुग्रह बरसाया है, पद 6। उसमें, उन्हें मुक्ति मिली, पद 7। मसीह में, परमेश्वर ने अपना अनुग्रह प्रकट किया है, पद 9, क्योंकि उसने मसीह में सब कुछ समेटने का निश्चय किया था, चाहे वह स्वर्ग में हो या पृथ्वी पर, पद 10। इसलिए, मसीह में, इफिसियों को चुना गया, पद 11।

क्योंकि पहिले लोगों ने उस पर आशा रखी, पद 12. और उसमें उन्होंने पूरा सत्य सुना, पद 13. देखिये कितनी बार उसमें, मसीह में, प्रकट होता है।

और खुद से पूछिए, आप कितनी बार किसी धर्मोपदेश में मसीह के बारे में सुनते हैं? ईसाई वार्तालापों में? पॉल कहते हैं कि ईश्वर को आशीर्वाद देना, जिसने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से आशीर्वाद दिया है, यह समझना है कि मसीह के बिना हमारे पास कुछ भी नहीं है। लेकिन मसीह में ही हमारे पास सब कुछ है। नॉर्थ पार्क में पढ़ाने वाले स्नोग्रास इसे इस तरह से समझाएंगे।

ईश्वर की उपस्थिति के बारे में जागरूकता और मसीह में जीना ही जीवन की कुंजी है। लोग पाप करते हैं क्योंकि वे ईश्वर को भूल जाते हैं। यह कितना अजीब है कि हम उस जगह को भूल जाते हैं जहाँ हम रहते हैं।

अगर हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के सामने और मसीह में रहते हैं, तो हम जानते हैं कि हम एक परिभाषित उपस्थिति में रहते हैं। हमारा जीवन मसीह और परमेश्वर के चरित्र द्वारा निर्धारित होता है। ईसाइयों को अपने परिवेश से बाहर रहना चाहिए।

एक आंतरिक परिभाषा से एक आंतरिक परिभाषा निकलती है जो मसीह में होने और उसकी आत्मा द्वारा सशक्त होने से आती है। मुझे लगता है कि नॉर्थ पार्क थियोलॉजिकल सेमिनरी के प्रोफेसर सही थे। स्नोग्रास मुझे बहुत दिलचस्प लगा।

जब आप इफिसियों पर स्नोग्रास की टिप्पणी पढ़ते हैं, तो वह इफिसियों में क्या हो रहा है, यह समझने के लिए मसीह के साथ चलने की आवश्यकता पर जोर देने के लिए कोई माफी नहीं मांगता है। आखिरकार, जो लोग प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार पर विश्वास नहीं करते और उसे

स्वीकार नहीं करते, वे एक ईसाई नेता द्वारा साथी ईसाइयों के लिए लिखे गए पाठ को कैसे समझ सकते हैं? उन्हें बेहतर ईसाई जीवन जीने के लिए सशक्त और प्रोत्साहित करना।

सोग्रास तर्क देगा। और यदि आप यह सब समझते हैं, तो इस लम्बी सांस रोककर की गई प्रार्थना की पंक्ति के अंत में आप समझ जाएंगे, आप उद्देश्य कथन की एक दोहराई गई भावना भी देखेंगे जो बार-बार आती है: पद 12 और पद 14 उसकी महिमा की प्रशंसा के लिए।

आइए हम उसे धन्य कहें जिसने हमें चुना है, जिसने हमें छोड़ा है, जिसने हमें अपनी महिमा की स्तुति के लिए मुहरबंद किया है। पद 12 और 13. पद 6. उसकी महिमामय कृपा की स्तुति के लिए।

फिर, आपको वहाँ त्रित्ववादी दायरा मिलना शुरू हो जाएगा। पिता, मसीह और पवित्र आत्मा सभी इस चर्चा में सामने आए। वाह।

आप देखिए, पौलुस यहाँ यह कह रहा है कि देखो परमेश्वर ने क्या किया है। और उसके नाम को धन्य कहो। आइए इस पत्र को समझना शुरू करें कि परमेश्वर ने आध्यात्मिक रूप से आवेशित वातावरण में क्या किया है।

बुतपरस्ती, जादू, राक्षसों का डर, शैतानी गतिविधियों का डर, बीमार होने का डर, और उपचार के लिए कोई जगह न होना क्योंकि ईसाई एस्क्लेपियस के मंदिर में नहीं जा सकते। उन्होंने कहा, आइए हम ईश्वर को आशीर्वाद दें, जिन्होंने हमें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद दिया है। मुझे आपको बताना चाहिए कि अफ्रीका और एक अफ्रीकी गाँव में पले-बढ़े होने के कारण, बुतपरस्ती वास्तविक थी।

राक्षसी गतिविधि वास्तविक थी। वास्तव में, मैं एक ऐसे गाँव में रहता हूँ जहाँ एक विशेष जनजाति द्वारा एक विशेष प्रकार का जादू टोना किया जाता है, जिनमें से कुछ मेरे क्षेत्र में भी थे। वे इसे स्थानीय भाषा में तुकवे कहते हैं।

कोई व्यक्ति किसी विशेष अनुष्ठान को कर सकता है और किसी व्यक्ति का नाम ले सकता है, और वे दावा करेंगे कि उन्होंने किसी व्यक्ति को मार दिया है। वह व्यक्ति सैकड़ों मील दूर हो सकता है। बाद में, हम सुनेंगे कि वह व्यक्ति या तो कार दुर्घटना के कारण या किसी अन्य कारण से लगभग उसी समय मर गया।

आमतौर पर ये लोग बहुत स्वस्थ होते हैं। जिस माहौल में मैं बड़ा हुआ, उसमें इन बुरी शक्तियों का डर वास्तविक था। एक ईसाई लड़के के रूप में, मुझे कई बार इन सबका सामना करना पड़ा।

दूसरी बात सच थी। लोग विश्वासी बनने के लिए आए और वूडू, जादू-टोना या बुतपरस्त छोटे मंदिरों को जलाकर नष्ट करने के लिए लाए। जब मैं गाँव में वापस आता हूँ, और हम रविवार की सुबह चर्च में होते हैं, तो मैं कुछ देखता हूँ।

जो लोग इन चीज़ों में इतने डूबे हुए थे, वे ईसाई बन गए और उन्हें अपनी आज़ादी मिल गई। उन्होंने महानता में ईश्वर की शक्ति देखी और देखा कि कैसे ईश्वर उन्हें इन सभी तरह की चीज़ों से बचा रहा था। जिस तरह से वे गाते हैं, जिस तरह से वे नाचते हैं, कभी-कभी वे मुझे इस तथ्य के लिए चुनौती देते हैं कि मैंने पश्चिम में बहुत ज़्यादा समय बिताया है, और मुझे नहीं पता कि ईश्वर ने क्या किया है। पॉल के श्रोताओं को ठीक से पता था कि ईश्वर ने क्या किया है।

पौलुस ने भी यही विश्वास जताया, और इसलिए उसने उन्हें इस पत्र में परमेश्वर को आशीर्वाद देने के लिए प्रेरित किया। उन्हें हर आध्यात्मिक आशीर्वाद से किसने आशीर्वाद दिया है? परमेश्वर की शक्ति वास्तविक है। उसने हमें आशीर्वाद दिया है।

आइए हम आशीर्वाद को अपने ऊपर लें। आइए हम उस आत्मविश्वास और दृढ़ विश्वास से भर जाएँ। आइए हम हर दिन उठकर परमेश्वर को उन चीज़ों के लिए धन्यवाद दें जो वह हमारे लिए अदृश्य क्षेत्र में कर रहा है।

अगर हम उनमें से कुछ को नहीं देखते हैं, तो हम स्वीकार कर सकते हैं कि उसने हमें चुना है। उसने हमें छोड़ा है। उसने हमें मुहरबंद किया है और हमें उसके साथ विरासत मिली है।

यह कितनी बड़ी आशा है। आइए हम इस पर कायम रहें। और मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे हम इस अध्ययन में आगे बढ़ेंगे, आप पाएंगे कि पॉल के साथ यह यात्रा वाकई एक समृद्ध यात्रा होगी।

भगवान आपको आशीर्वाद दें।

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 20, श्वास रहित आह्वान, इफिसियों 1:3-14 है।